देवपूजा में जानने योग्य बाते

Pt. Pramod Sharma Gaur

हिन्दु-संस्कृति अत्यन्त विलक्षण है। इसके सभी सिद्धान्त पूर्णतः वैज्ञानिक और मानवमात्रकी लौकिक तथा पारलौकिक उन्नति करने वाले हैं॥ मनुष्यमात्रका सुगमतासे एवं शीघ्रता से कल्यान कैसे हो इसका जितना गम्भीर विचार हिन्द-संस्कृतिमें किया गया है, उतना कहीं ओर प्राप्त नहीं होता। जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त मानव जिन-जिन वस्तुओं एवं व्यक्तियों के सम्पर्क में आता है और जो जो क्रियाएँ करता है, उन सबको हमारे क्रान्तदर्शी ऋषि-मुनियोंने बड़े वैज्ञानिक ढंग से सुनियोजित, मर्यादित एवं सुसंस्कत् किया है और उनका पर्यावसान परमश्रेय की प्राप्ति से किया है। इसलिये भगवान् ने गीता में कहा है –

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः। न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्॥

तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ। ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्त कर्म कर्तुमिहार्हसि॥ (Gita 16 / 23-24)

'जो मनुष्य शास्त्रविधि को छोड़ कर अपनी इच्छा से मनमाना आचरण करता है, वह न अपने अन्तः करणकी शुद्धि को, न सुख को, और न परमगति को ही प्राप्त होता है। अतः तेरे लिये कर्तव्य-अकर्तव्य व्यवस्थामें शास्त्र ही प्रमाण है- ऐसा जानकर तु इस लोक में शास्त्रविधि से नियत कर्तव्य-कर्म करनेयोग्य है अर्थात् तुझे शास्त्रविधि के अनुसार कर्तव्य-कर्म करने चाहिये।'

शास्त्र अथाह समुद्र की भाँति हैं। उसमे जो पूजा विधि की मुख्य बातें हमारे शास्त्रों में कही गईं हैं वे आपके सामने एकत्रित कर रहा हूँ।

१ सूर्य, गणेश, दुर्गा, शिव और विष्णु ये पंच देव कहे गये हैं। इनकी पूजा सभी कार्यों में करनी चाहिये।

२ भगवान् गणेश को तुलसी, दूर्गाको दूर्वा, सूर्य को बिल्बपत्र और विष्णु को सादे चावल नहीं चढ़ाने चाहिये।

३ देवपूजा हमेशा उत्तरमुख या पूर्वमुख होकर और पितृपूजा दक्षिणमुख होकर ही करनी चाहिये।

४ केश खोलकर, गीले वस्त्रों को पहन कर पूजा कभी भी नही करनी चाहिये।

५ सात अंगुल से बारह अंगुल तक की प्रतिमा का पूजन घर में कर सकते हैं। इससे बड़ी प्रतिमा घर में शुभ नहीं हैं।

६ घर में दो शिवलिंग, दो शालीग्राम, द्वारिका के दो चक्र, दो सूर्य, तीन गणेश, तीन दुर्गा तथा दो शंख की पूजा न करें।

७ अग्नि से जली तथा खण्डित प्रतिमा का घर में अर्चन ना करें।

८ पत्र, पुष्प और फलको अधोमुख करके नहीं चढ़ाना चाहिये। वे जैसे उत्पन्न हों उसी रूप में उन्हें देवता पर चढ़ाना चाहिये।

९ भगवान पर चढ़ाया हुया फूल, धोया हुया, सूघाँ हुआ, धरती पर गिरा हुया ऐसे पुष्पों को पूजा में प्रयोग ना करें।

१० कार्तवीर्य को दीप प्रिय है, सूर्य को नमस्कार, विष्णु को स्तुति, गणेश को तर्पण, दुर्गा को अर्चना और शिव को अभिषेक प्रिय है।अतः इन देवताओं को प्रसन्न करने के लिये इनके प्रिय कार्य करने चाहिये।

११ सूर्य से आरोग्य की, अग्निसे श्रीकी, शिवसे ज्ञानकी, विष्णुसे मोक्षकी, दुर्गा से रक्षाकी, भैरवसे कठिनाइयोंसे पार पानेकी, सरस्वति से विद्याके तत्त्वकी, लक्ष्मिसे ऐश्वर्य-वृद्धिकी और गणेशजी से सभी वस्तुओंकी याचना करनी चाहिये।

१२ घी का दीपक देवताके दायें भाग में और तेल का दीपक बायें भागमें रखना चाहिये।

१३ नवरात्र में कन्या पूजन एक वर्ष से लेकर नौ वर्ष तक ही की कन्या का करना चाहिये।

१४ विष्णुके मन्दिर की चार बार, शंकर के मन्दिर की आधी बार, दुर्गा के मन्दिर की एक बार, सूर्य के मन्दिर की सात बार, गणेश के मन्दिर की तीन बार परिक्रमा करनी चाहिये।

१५ भगवान के सामने हमें ये सभी कार्य नहीं करने चाहिये जैसे- अशुद्ध अवस्था में जाना, एक हाथ से प्रणाम करना, सामने पैर फैलाकर बैठना, पलंग या खाटपर बैठना, खाना-पीना-सोना, किसी की प्रतिमा या कोई प्रतीक रखकर उसकी पूजा या स्तुति करना, योग्य होने पर भी सानान्य उपचारों से पूजा करना, गुरु के विषय में स्तुति गान या महिमा करना।

१६ किसी भी वैदिक मन्त्र का गल्त उच्चारण नहीं करना चाहिये, विद्वन ब्राह्मण से पूरी विधि जानकर ही करें वही फलदायक होता है।

१७ भगवान् शिव (शिवलिङ्ग) की स्थापना घर में नहीं करनी चाहिये।

१८ खण्डित मूर्ति व पूजा के बचे फूल, चावल, जोत, धूप आदि सब को जल प्रवाह या धरती खोदकर दबा देने चाहिये।

१९ देवों व ऋषियों को अनामिका से पितृजनों को तर्जनी से व स्वयं को मध्यमा अंगुली से तिलक करना चाहिये।

२० श्याम रंग का तिलक शन्ति प्रदायक, लाल वश में करने वाला, पीला लक्ष्मिप्रद व श्वेत विष्णु प्रीतिकर होता है।

२१ पूजा, पाठ, आरति आदि कार्य समाप्ति के बाद दीपक को स्वयं शांत होने देना चाहिये। हाँथ से या फूँक मारकर बुजाना अशुभ होता है।

२२ दूध, दही, देसी घी, शहद व शक्कर इन पाँचों को मिलाकर पंचामृत बनता है, जो देव पूजा का एक अंग है। पंचामृत में गंगाजल व तुलसी पत्र की आवश्यकता नहीं होती है।

२३ कमल पाँच रात्रि तक, बिल्ब पत्र दस व तुलसी पत्र ग्यारह रात्रि तक वासी नहीं होते। गंगाजल कभी भी वासी नही होता।

२४ हर प्रकार के मन्त्र जाप में रुद्राक्ष की माला सर्वश्रेष्ठ होती है।

२५ पुरुष को हमेशा दाँय हाथ और स्त्रियां को हमेशा बाँय हाथ पर ही कलावा (मौली) बंधवानी चाहिये।

२६ चलते-फिरते, खाते-पीते मन्त्र जाप नहीं करना चाहिये बल्कि एक जगह पर आसन के उपर बैठकर करना चाहिये।

२७ अग्निशाला, गौशाला, देवता और ब्राह्मण के समीप तथा जप, स्वाध्याय और भोजन व जल ग्रहण करते समय जूते उतार देने चाहिये।